उत्तर विद्यालयों में छात्र–छात्राओं के कई विषयों का अध्यापन कराया जाता है, ताकि बालक–बालिकाओं का सर्वांगीण विकास हो सके। इन विषयों के शिक्षण के दौरान अनेक प्रकार के सीखने के अनुभवों को भी स्थान प्रदान किया जाता है।

इन अनुभवों से बालक–बालिकाओं के ज्ञान की वृद्धि होती है, सोचने–समझने का ढंग बदलता है, कार्य–शैली बदलती है और उनकी अभिरूचि तथा अभिवृत्ति का भी विकास होता है। यह सम्पूर्ण विकास 'व्यवहार परिवर्तन' कहलाता है। बालक–बालिकाओं के व्यवहार परिवर्तन में ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक तीनों ही मानसिक पक्ष शामिल होते है। छात्र–छात्राओं का उक्त मानसिक पक्षों का विकास करना ही शिक्षण का मुख्य उद्देश्य होता है। वर्तमान में पुस्तकीय ज्ञान पर अधिक बल दिया जा रहा है, जबकि शिक्षक शिक्षण का उद्देश्य व्यवहार में परिवर्तन लाना है। इतिहास शिक्षण के उद्देश्यों को अतीत घटनाओं, राजा, महाराजाओं, युद्धों, सन्धियों की गाथा तक ही सीमित कर दिया है। परीक्षक भी प्रश्न–पत्र निर्माण करते समय यह ध्यान नहीं रखते कि किन–किन व्यवयहार परिवर्तनों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। मूल्यांकन विधि को अपनाकर इन दोषों को दूर किया जा सकता है। विभिन्न प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि शिक्षण व परीक्षण की क्रियाएँ उद्देश्य आधारित तथा एक–साथ सम्पन्न होनी चाहिए। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव बालक, समाज व राष्ट्र उत्थान पर पडता है। अत: इतिहास शिक्षक को व्यावहारिक पक्ष पर अधिक बल देना चाहिए। उपर्युक्त प्रकार से विधिवत् इतिहास शिक्षण के उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से समझना इतिहास सशिक्षक के लिए अत्यावश्यक है।

इतिहास की प्रकृति स्थिर न होकर निरन्तर गतिशील रही है। मानव सभ्यता के जन्म से ही मानव के जीवन मूल्यों में परिवर्तन होते रहे है। सभ्यता एवं संस्कृति व व्यवहार भी बदलते रहे है। इसी कारण इतिहास के उद्देश्य भी बदलते रहे है, शिक्षण उद्देश्यों का प्रतिपादन सामाजिक व राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय आवश्यकताों की पूर्ति के लिए किया जाना चाहिए। अत राष्ट्रीयता एवं अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास करने के लिए इतिहास की भावना का विकास करने के लिए इतिहास शिक्षक को शिक्षण के प्राप्य उद्देश्यो का ज्ञान होना परमावश्यक है।

प्रश्न–3 माध्यमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण के 'सामान्य उद्देश्यों' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये?
Write a short note on 'General Aims' of teaching history at secondary stage.

उत्तर माध्यमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण के सामान्य उद्देश्य– माध्यमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण के सामान्य उद्देश्य निम्न प्रकार है–

1. **लोकतान्त्रिक नागरिकता का विकास**– माध्यमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य छात्रों में लोकतान्त्रिक नागरिकता का विकास करना है। छात्रों में प्रजातान्त्रिक गुणों का होना आवश्यकता है। इनसे समाज, समुदाय राष्ट्र की उन्नति होती है। लोकतान्त्रिक मूल्यों को अपनाना एक श्रम साध्य तपस्या होती है। इस तपस्या को इतिहास के माध्यम से पूर्ण किया जा सकता है।
2. **व्यक्तित्व का विकास करना**– छात्रों के व्यक्तित्व के विकास में अनेक गुणों, प्रेरणाओं, उपलब्धियों की आवश्यकता होती है। व्यक्तित्व विभिन्न गुणों का पुज होता है। ये गुण उसके नैतिक बौद्धिक, मानसिक शारीरिक विकास से ही विकसित होते हैं। इन गुणों को इतिहास से पोषित किया जा सकता है, ऐतिहासिक पुरूषों की जीवनियाँ सुनाकर, सन्तों की कहानियाँ सुनकर आदि।
3. **नेतृत्व के गुणों का विकास करना**– इतिहास शिक्षण के द्वारा छात्रों में नेतृत्व करने के गुणों को सिखाया जा सकता है। चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक, हर्षवर्धन, राणा प्रताप, शिवाजी, सुभाषचन्द्र, गाँधीजी आदि अनेक ऐसे महान योद्धा और नेता हुए है, जिन्होंने देश को संगठित करने में महत्वपूर्ण कार्य किया है। इन सैनिको,

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

उत्तर **स्थानीय इतिहास का अर्थ (Meaning of Local History)**–जिस स्थान पर हम रहते है, उस स्थान विशेष का इतिहास ही स्थानीय इतिहास कहलाता है। स्थानीय इतिहास के अन्तर्गत उस स्थान की समस्त प्रकार की ऐतिहासिक जानकारी शामिल होती है। स्थानीय स्तर पर पाए गए स्मारक, अवशेष, अभिलेख, मन्दिर, गढ़, किले स्थानीय इतिहास के स्त्रोत होते है। स्थानीय इतिहास के आधार पर ही राष्ट्रीय इतिहास लिखा जाता है। स्थानीय इतिहास मे प्राय परम्पराओं, रीति–रिवाजो रहन–सहन, वेशभूषा, उद्योग–धन्धे, व्रत, त्यौहार, मेलो आदि का विशद वर्णन होता है, जो कि स्थान विशेष की समस्त प्रकार की जानकारी हमे देता है। अत स्थानीय इतिहास राष्ट्रीय इतिहास का पूरक माना जाता है।

स्थानीय इतिहास एवं राष्ट्रीय इतिहास एक–दूसरे के पूरक है– स्थानीय एव राष्ट्रीय इतिहास एक–दूसरे के पूरक है, एक के अभाव मे दूसरा महत्वहीन है। छात्र सर्वप्रथम परिवार, समाज आसपास के वातावरण से जानकारियाँ प्राप्त करता है। स्थानीय ऐतिहासिक, सामाजिक, अवशेष, स्मारक, चिन्हो आदि से वह स्थानीय, ज्ञान प्राप्त करता है। स्थानीय महापुरूषों के बारे मे ज्ञान प्राप्त करता है। अपने क्षेत्र का ज्ञान प्राप्त करने के बाद बालक राष्ट्रीय इतिहास का ज्ञान प्राप्त करता है। छोटी–छोटी स्थानीय ऐतिहासिक महत्व की घटनाएँ ही संगृहीत होकर राष्ट्रीय इतिहास का निर्माण करती हैं। उदाहरण के लिए– महाराणा प्रताप मेवाड़ के शासक थे, मेवाड़ के छात्र स्थानीय स्तर पर महान देशभक्त महाराणा प्रताप के बारे मे जानकारी प्राप्त कर सकते है। इस प्रकार महाराणा प्रताप मेवाड (राजस्थान) प्रान्तीय स्तर से ऊपर राष्ट्रीय वीर महापुरूषों की श्रेणी मे आ गए। अत स्थानीय इतिहास एवं राष्ट्रीय इतिहास एक–दूसरे के पूरक है।

स्थानीय इतिहास शिक्षण का महत्व
(Importance of Teaching of Local Hitory)

1. **वर्तमान की सहायता से अतीत का ज्ञान**– बालक वर्तमान मे रहकर अपने अतीत मे क्या–क्या ऐतिहासिक घटनाएँ हुई इनकी जानकारी स्थानीय इतिहास से प्राप्त कर अपने स्थानीय ज्ञान को पुष्ट कर सकता है।
2. **राष्ट्रीय समस्या के समाधान में सहायक**– अनेक राष्ट्रीय समस्याएँ स्थानीय घटनाओ से जुड़ी हुई होती है। ऐसी राष्ट्रीय समस्याओं को स्थानीय इतिहास शिक्षण के आधार पर ही समझा जा सकता है और उनका समाधान भी स्थानीय स्तर पर किया जा सकता है।
3. **देशभक्तों, महापुरूषों के कार्यों की जानकारी देने हेतु**– देश–भक्तो एव महापुरूषो के प्रारम्भिक जीवन, बाल्यावस्था व जन्म स्थान आदि की पूर्ण जानकारी स्थानीय इतिहास से होती है। अगर हमे महाराणा प्रताप के बारे मे पूर्ण जानकारी प्राप्त करनी है तो हमें 'मेवाड़ के इतिहास' एवं स्थानीय स्तर पर मेवाड़ की पूर्ण जानकारी प्राप्त करनी होगी तभी हम राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय महापुरूष महाराणा प्रताप का इतिहास लिख सकते है, अत स्थानीय इतिहास राष्ट्रीय इतिहास की आधाशीला एवं पूरक के रूप में माना जाता है।
4. **स्थानीय अवशेषों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए**– भारतीय इतिहास के अवशेष अलग–अलग स्थानो पर बिखरे हुए है। अत: स्थानीय स्तर पर उपलब्ध अवशेष, शिलालेख, अभिलेख, धार्मिक–स्थल, स्मारक, किले, गढ़, खण्डहर आदि के द्वारा हमे स्थानीय इतिहास की पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है अत स्थानीय इतिहास की पूर्ण जानकारी छात्रों को देने के लिए पुरा अवशेष अत्यधिक उपयोगी है। उदाहरण के लिए– जयपुर जिले के विराटनगर में अशोक के अभिलेख, शिलालेख है, जो उस समय की सामाजिक अवस्था व लिपि की जानकारी हमे देते है।

Scanned by CamScanner

3. **डमविल के अनुसार**– "एक विषय को दूसरे विषय के अधीन करने के सिद्धानत को साधरणतया सह–सम्बन्ध के नाम से उल्लेख किया जाता है।"

Scanned by CamScanner

के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करता है यह मानव जाति की भावनाओं तथा कृत्यों का क्रमागत एवं वैज्ञानिक अध्ययन है।

i. नेपोलियन के अनुसार– "इतिहास क्या है? बल्कि काल्पनिक कथाएँ ही है।"

ii. "भूतकालीन घटनाओं का उल्लेख ही इतिहास है।" – हैनरी जॉनसन

iii. "इतिहास घटनाओं या विचारों की उन्नति का सुसम्बद्ध विवरण है।" – रिपसन

iv. "इतिहास गतिशील मानव व्यवहार की खोज है।" – टायाबी

v. "इतिहास हमारे सम्पूर्ण भूतकाल का वैज्ञानिक अध्ययन तथा लेखा–जोखा है। – प्रो. घाटे
'(History is scientific study and a record of our complete past)'.
- Prof. Ghate

vi. मानव ने जो कुछ किया और कहा है, यहाँ तक कि जो उसने सोचा है, वह इतिहास है।
– मेटलैण्ड

vii. "इतिहास वह बौद्धिक स्वरूप है, जिसमें सभ्यता अपने अतीत की चिंता करती है।
– जॉन हूजिंगा

Scanned by CamScanner

11. **लचीलापन**– एक उत्तम पाठ योजना में शिक्षक और शिक्षार्थियों के कार्य निश्चित होने के बावजूद यह इतनी लचीली होनी चाहिये कि अध्यापक को अपनी परिस्थिति विशेष में इधर–उधर होने की गुंजाइश रहे।

इतिहास के पाठ्यक्रम में से कोई एक प्रकरण चुनिए और पढ़ाने से पहले प्रकरण की प्रस्तावना के लिये उपयुक्त प्रश्न लिखिए।

Choose one topic in History curriculum and write down the introductory questions before the lesson.

प्रकरण विश्व की प्रमुख सभ्यताएँ

प्रस्तावना प्रश्न–

क्रमांक	छात्राध्यापिका क्रियाएँ	विद्यार्थी क्रियाएँ
प्र. 1	भारत की प्रमुख सहायक नदियाँ कौन–कौनसी है?	भारत की प्रमुख सहायक नदियाँ– गंगा, यमुना, सिन्धु तथा सरस्वती आदि नदियाँ है।
प्र. 2	इन नदियो की घाटियो के किनारे विकसित होने वाली सभ्यताओ को क्या कहते है?	इन नदियो की घाटियो के किनारे विकसित होने वाली सभ्यताओ को नदी घाटी सभ्यताएँ कहते है।
प्र. 3	इन नदी घाटी सभ्यताओ के किनारो पर किसके अवशेष मिले है?	इन नदी घाटी सभ्यताओं के किनारो पर मानव समूहो के अवशेष मिले है।
प्र. 4	इन नदियो के किनारे घूमकर मानव समूहो मे किस भावना का जन्म हुआ?	इन नदियो के किनारे घूमकर मानव समूहो मे बस्ती बनाकर रहने की भावना का जन्म हुआ।

Scanned by CamScanner

T	=	Time Sense	=	समय का पाबन्द।
O	=	Organiser	=	संगठनकर्त्ता।
R	=	Resourcefull	=	साधन सम्पन्न।
Y	=	Young	=	जवान (जवानों जैसा जोश)।
T	=	Tactful	=	चतुर (नीति निपुण)।
E	=	Enthusiasm	=	उत्साही।
A	=	Adaptability	=	अनुकूलनशीलता।
C	=	Confident	=	आत्मविश्वासी।
H	=	Helpful	=	सहयोगी।
E	=	Efficient	=	योग्य।
R	=	Resourceful	=	साधन सम्पन्न।

शिक्षक के गुणों के सम्बन्ध में न्यूयॉर्क के शिक्षा विभाग ने निम्नलिखित गुण बताएँ है–

T	=	Throughoutfulness	=	विवेक।
G	=	Gregariousness	=	सामूहिकता।
R	=	Reliabililty	=	विश्वसनीयता।
O	=	Open Mindedness	=	नए विचार ग्राहाता।
A	=	Ability of Leadeship	=	नेतृत्व की क्षमता।
O	=	Originality	=	मौलिकता।
I	=	Integrity	=	निष्कपटता।
D	=	Discernment	=	दूरदर्शिता।
T	=	Tact	=	चातुर्य।
T	=	Tidiness	=	स्वच्छता।
A	=	Abililty to do creditable College work	=	कॉलेज कार्यक्रमों को उत्तम ढग से करने की क्षमता
E	=	Enthusiasm	=	उत्साही।
A	=	Adaptability	=	अनुकूलनशीलता।
C	=	Co-operateness	=	सहकारिता।
H	=	Health	=	स्वास्थ्य
E	=	Effectiveness	=	कुशलता।
R	=	Resourcefulness	=	साधन सम्पन्नता।
S	=	Sense of Humour	=	विनोद प्रियता
O	=	Objectivity	=	वस्तुनिष्ठता।
F	=	Fluency	=	वाक्पटुता।

प्रश्न–9 आप इतिहास के शिक्षक के दृष्टिकोण एवं प्रशिक्षण में सुधार के लिए क्या सुझाव देंगे?
What suggestions you desire for the outlook of teacher and improvement in teaching of history?

उत्तर आप इतिहास के शिक्षक के दृष्टिकोण एवं प्रशिक्षण में सुधार के लिए सुझाव– इतिहास के शिक्षक के दृष्टिकोण एवं

Scanned by CamScanner

पाठ्यक्रम के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिये विभिन्न शिक्षाशास्त्रियो द्वारा दी गई परिभाषाएँ इस प्रकार है–

1. **माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार**– "पाठ्यक्रम का अर्थ केवल उन सैद्धान्तिक पाठ्य विषयो से नही है, जो विद्यालय मे परम्परागत ढंग से पढाए जाते है, वरन् इसमे अनुभवो की वह सम्पूर्णता निहित है, जिसको छात्र विद्यालय, कक्षा–कक्ष, पुस्तकालय, वर्कशॉप, प्रयोगशाला और खेल के मैदान तथा शिक्षको एव शिष्यों के अॅक गणित अनौपचारिक सम्पर्को से प्राप्त करता है। इस प्रकार विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन पाठ्यक्रम हो जाता है, जो छात्रो के जीवन के सभी पक्षो को प्रभावित कर सकता है और उसके सन्तुलित व्यक्तित्व के विकास में सहायता देता है।"
2. **मुनरो के अनुसार**– "पाठ्यक्रम मे समस्त अनुभव निहित है, जिनको विद्यालय द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये उपयोग में लाया जाता है।"

इन सभी परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते है कि विद्यालय के अन्दर या बाहर शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये नियोजित रूप से जो भी किया जाता है, वह सभी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आता है। वास्तव में यह एक ऐसा साधन है, जिसके द्वारा बालक स्वय को अपने वातावरण मे व्यवस्थित करना सीखते है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य– पाठ्यक्रम का निर्माण समाज, राष्ट्र तथा व्यक्ति की आवश्यकता को ध्यान में रखकर ही किया जाता है। साथ ही शिक्षा के उद्देश्यानुसार पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है। समाज तथा राष्ट्र द्वारा निर्धारित उद्देश्यो को प्राप्त करने के लिये तथा व्यक्ति अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये उद्देश्यानुरूप पाठ्यक्रम का अध्ययन करता है। पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय इसके उद्देश्यों का निर्धारण कर लिया जाता है। पाठ्यक्रम के निर्धारित उद्देश्यों का सोदाहरण विवेचन निम्न प्रकार किया जा सकता है–

1. **पाठ्यक्रम में रूचि विकसित करना**– पाठ्यक्रम का निर्माण बालक की उस विषय में रूचि विकसित करने के उद्देश्य से किया जाता है। पाठ्यक्रम मे उन प्रकरणो का चयन किया जाता है जो बालक के जीवन से प्रत्यक्ष रूप से सम्बद्ध होते है, जिससे बालक उस पाठ्य वस्तु को रूचि के साथ सीखता है।

Scanned by CamScanner

personality)– एक अच्छी शिक्षण विधि सब प्रकार से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के शारीरिक, मानसिक नैतिक एवं संवेगात्मक पक्षों के संतुलित विकास में सहयोगी होनी चाहिए।

- **क्रियाशीलता (Activity Centrered)**– एक अच्छी शिक्षण विधि द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को पूर्ण सक्रियता प्रदान करने के प्रयत्न किए जाने चाहिए। विद्यार्थी मात्र दर्शक और मूक श्रोता न रहकर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में पूर्णतया सक्रिया रहकर अधिगम अनुभव प्रापत करें तथा अपने स्वयं के अनुभवों के आधार पर अधिक से अधिक ज्ञान ग्रहण करें, यही चेष्टा एक अच्छी विधि में की जाती है।
- **व्यक्तिगत ध्यान देने में सहायक (Helpful in paying individual attention)**– एक अच्छी शिक्षण विधि ऐसे अवसर प्रदान करती है कि अध्यापक विद्यार्थियों के ऊपर ठीक प्रकार से व्यक्तिगत ध्यान देने में समर्थ हो सके और इस प्रकार उनकी व्यक्तिगत कठिनाइयों का निवारण कर सके तथा उन्हें उनकी अपनी गति से आगे बढ़ने में सहायक कर सके।
- **व्यावहारिकता एवं प्रयोगशीलता (Practicability and usability)**– एक अच्छी विधि शिक्षण के लिए प्रयोग में लाए जाने की दृष्टि से पूर्ण व्यावहारिक एवं सक्षम होती है। एक दृष्टि से अच्छी विध को निम्न विशेषताओं से मुक्त होना चाहिए–
  - **i.** इसके द्वारा पाठ्यक्रम को समय पर समाप्त करने में कठिनाई नहीं होनी चाहिए।
  - **ii.** इस विध पर आधारित पाठ्यपुस्तके भली भाँति उपलब्ध होनी चाहिए।
  - **iii.** इस विधि में प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी नहीं खटकनी चाहिए।
  - **iv.** समय, शक्ति और धन के उपयोग की दृष्टि से यह अधिक खर्चीली नहीं होनी चाहिए।

3. इतिहास शिक्षण की शिक्षण विधियों का वर्गीकरण करो?

Do the classification methods of Historyteaching.

Scanned by CamScanner

उत्तर– इतिहास की शिक्षण पद्धतियो को वर्गीकृत करने का, यहाँ समुचित आधार माना गया है। इस आधार पर शिक्षण पद्धतियो को निम्न तीन भागो मे वर्गीकृत किया जा सकता है

शिक्षण पद्धतियों का वर्गीकरण (Classification of teaching methods)-

अनुदेशन अन्तः क्रिया केन्द्र (Focus of Instructions)	शिक्षण विधियाँ (Teaching Methods)
विद्यार्थी केन्द्रीत Pupil Centered	→ प्रायोगिक कार्य (Practical work) → पुस्तकालय कार्य (Library work) → दत्त कार्य (Assignments) → व्यक्तिगत प्रायोजनाएँ (Individual Projects) → स्व अनुदेशी पद्धतिया (Self Instruction materials)
समूह केन्द्रीत Group Centered	→ सामाजिक अभिव्यक्ति (Socialized recitation) → रोल प्ले (Role play) → मस्तिष्क मंथन (Brain storming) → समस्या पद्धति (Problem method) → योजना पद्धति (Project method)
शिक्षक केन्द्रीत Teacher Centered	→ व्याख्यान (Lecturer) → दल शिक्षण (Team teaching) → प्रदर्शन (Demonstration)

Scanned by CamScanner

व्याख्यान विधि की विशेषताऐं–

1. इससे बालकों को ध्यान केन्द्रित करने की आदत पड़ती है।
2. इससे समय की बचत होती है। कम समय में अधिक विषय–वस्तु का बोध करवाया जा सकता है।
3. पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण पर अधिक बल दिया जाता है।
4. शिक्षक के गुणों एवं योग्यताओं का विशेष प्रभाव पड़ता है। व्याख्या की सजीवता से बालकों को सीखने के लिए प्रेरणा मिलती है।
5. पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य संदर्भ की जानकारी दी जा सकती है।
6. बालकों को नवीनतम तथ्यों की जानकारी दी जा सकती है।

व्याख्यान पद्धति के लाभ–

1. प्रस्तुत पाठ्यवस्तु का उच्च गुणात्मक स्तर।
2. एक ही विषय पर विभिन्न रूप से चिन्तन करने, भिन्न–भिन्न पहलुओं से विचार करने की अन्दृष्टि का विकास।
3. छात्र समस्याओं का तुरन्त समाधान सम्भव।
4. शिक्षक अपने प्रत्यक्ष प्रभाव से छात्रों की ग्राह्यता के स्तर में वृद्धि कर सकता है।
5. अच्छे व्याख्यान से प्रत्यक्षत: छात्र अन्त: क्रियाओं की, एकाग्रता की, एकाग्रता के नोट्स लेने और प्रश्नोत्तर आदि कुशलताओं का विकास होता है।
6. पाठ्यवस्तु संगठन के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित।
7. विद्यार्थी की सुनकर समझने की आदतों का विकास।
8. कम समय में अधिक विषयवस्तु की प्रस्तुति सम्भव।
9. उच्च कक्षाओं के शिक्षण की सर्वाधिक सुगम विधि।
10. कम खर्चीली प्रणाली, कम साधनों से शिक्षण सम्भव।
11. ज्ञानात्मक पहलूओं के प्रशिक्षण हेतु श्रेष्ठ विधा।

व्याख्यान पद्धति से हानियाँ–

1. लम्बे समय तक, कई कालांशों तक व्याख्यान करना शिक्षक की कार्यक्षमता एवं गुणवत्ता पर विपरीत प्रभाव डालता है।
2. एक स्तर तक पहुँचते–पहुँचते व्याख्यान नीरस लगते लगता है। कक्षा का वातावरण भी निष्क्रिय होने का अंदेशा रहता है।
3. व्याख्यान का केन्द्र–बिन्दु शिक्षक है, न कि छात्र, जिसमें शिक्षक ज्ञान उंडेल देता है।
4. विषय के सभी पक्षो के शिक्षण हेतु यह विधा अनुपयुक्त है।।
5. यह एक तरफा सम्प्रेषण विधि है, जिसमें शिक्षण–अनुदेशन के द्विपक्षीय एवं त्रि–पक्षीय सिद्धान्तों की पूर्ति नहीं होती।
6. माध्यमिक और निम्न माध्यमिक स्तर की कक्षाओं के अनुपयुक्त विधा है।
7. सभी शिक्षक अच्छे अव्याख्यान प्रस्तुतकर्त्ता नहीं हो सकते।
8. कमजोर छात्रों के लिए उपयुक्त नही हैं।
9. प्रभावी व्याख्यान हेतु उपयुक्त प्रदर्शन–सामग्री और सन्दर्भ पुस्तके सभी विद्यालयों में उपलब्ध नही होती।
10. यह 'सुनने' पर आधारित विधा है, जिसमे छात्र अवधान और अधिगम सीमित ही रह पाता है।

Scanned by CamScanner

परिस्थिति या घटनाक्रम को लेकर उद्वेलन उत्पन्न करती है और उक्त स्थितियों पर छात्रा को स्वतन्त्र व निर्भीक वैचारिक प्रतिक्रिया करने का अवसर प्रदान करती है। इस विधि से व्युत्पन्न विचार क्रान्तिकारी, मौलिक आलोचनात्मक, विपरीत सोच वाले और नितान्त मौलिक भी होते है।

मस्तिष्क विप्लव के सोपान (Steps of Brain storming)– विल्सन (Wilson) 1987 ने मस्तिष्क उत्प्लवन के निम्नलिखित आठ सोपान दिए है–

1. **प्रथम–सोपान (परिचय)**–
   - **सक्रिय सहभागिता**– प्रत्येक सदस्य को सअपने विचार अभिव्यक्त करने है।
   - **आलोचना**– प्रत्येक बच्चे एक दूसरे का सम्मान करे, आलोचना नही।
   - **विचार अभिव्यक्ति**– मुक्त चिन्तन का ही स्वा किया जाएगा।
   - **संख्या**– विचारो की गुणात्मकता से अधिक मात्रा की आवश्यकता अधिक है।
   - **तारतम्यता**– प्रत्येक सदस्य किसी दूसरे सदस्य के विचारो को जोड़कर नए विचार करने के लिए स्वतंत्र है।
2. **द्वितीय–सोपान**– हिमभजक (Ice Breaker) हिमभजक का अर्थ है ऐसा विचार, जो परम्परागत या सामान्यत: प्रचलित विचार को खण्डित करते हुए नए विचार उत्पन्न करे।
   उदाहरण– सामान्यत: पेन का कार्य लिखना है, परन्तु इसके निम्न कार्य भी हो सकते है–
   1. संकेतक के रूप मे प्रयोग करना।
   2. बुक माक्र के रूप मे प्रयोग।
   3. कॉपी में छेद करने के लिए
   4. किसी डिब्बे का ढक्कन खोलने के लिए।
3. **तृतीय सोपान– विषय या समस्या परिभाषीकरण** (statement of subject or problems)– इस सोपान मे एक स्पष्ट कथन के द्वारा मस्तिष्क उत्प्लवन सत्र के विषय को परिभाषित किया जाता है।

   उदाहरण–
   i. जनसंख्या पर नियंत्रण की समस्या
   ii. आतकवाद पर नियत्रण की समस्या
   iii. भ्रष्टाचार पर नियत्रण की समस्या
4. **चतुर्थ सोपान**– **समस्या पर संकेन्द्रण** (Attention on problem)– इसमे विद्यार्थियो से समस्या के समाधान के बारे मे पूछा जाता है।

   उदाहरण के लिए– जनसंख्या नियंत्रण की समस्या के निम्न समाधान विद्यार्थी बता सकते है–
   - जागरूक करके
   - सुविधाओं का प्रलोभन देकर
   - कानून बनाकर
   - आयकर मे छूट देकर
   - धर्म से जोड़कर

Scanned by CamScanner

- बैंक की ऋण सुविधाओं को देकर
- नौकरी के साथ जोड़कर

5. **पंचम सोपान– संकेन्द्रित कथन का चयन (Selection of centralized statement)–** इसमें अध्यापक लोकतान्त्रिक तरीके से छात्रों की सहायता लेते हुए एक संकेन्द्रित कथन का चयन करता है।

उदाहरण– सुविधाओं का प्रलोभन देकर।

6. **षष्ठम सोपान– मस्तिष्क उप्पलवन**– इसमें अध्यापक विद्यार्थियों से संकेन्द्रित कथन के सन्दर्भ म विचार प्राप्त करता है। ये विचार का समाधान का विकास करते हैं। जैसे–
   1. व्यावसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रमों में प्राथमिकता।
   2. होटलो में प्राथमिकता।
   3. रेल–बस यात्रा की टिकट मिलने मे प्राथमिकता।

7. **सप्तम सोपान– मूर्खतम सुझाव (suggestion)–** इस चरण में मूर्खतम सुझाव की घोषणा की जती है। इसमें निम्न अवस्थाएँ होती हैं–
   1. मूर्खतम सुझाव का चयन
   2. इस सुझाव को कैसे उपयोगी बनाया जाए
   3. उपयोगी सुझाव

8. **अष्टम सोपान–(मूल्यांकन)**– मस्तिष्क उत्प्लवन सत्र की समाप्ति के पश्चात ढेरों विचार एवं सुझाव ऐसे बच जाते हैं, जो न तो प्रवाहता के साथ में प्रस्तुत किए गए, न ही जिनका मूल्यांकन किया गया हो, इसलिए कुछ समय पश्चात् मुख्य सत्र का मूल्यांकन किया जाता है।

मस्तिष्क विप्लव के लाभ (Merits of Brain Storms)–

1. पूर्णत: नवीन विचारो एवं सुझावों को उत्पन्न किया जाता है।
2. सृजनात्मकता को प्रोत्साहित किया जाता है।
3. अधिक तैयारी की आवश्यकता नही होती है।
4. प्रशिक्षण के अलावा अन्य स्थितियों में भी उपयोग में लाई जा सकती हैं।
5. सभी प्रशिक्षणार्थियों की सक्रिय सहभागिता प्राप्त की जाती है।

मस्तिष्क विप्लव की सीमाऐं (Limitations of Brain Storms)–

1. सत्रों का नियत्रण कठिन होता है।
2. कुछ प्रतिभागी सहभागिता करने के प्रति उदासीन होते है।
3. किसी विषय के अध्ययन की सुव्यवस्थित विधि नही है।
4. मूल्यांकन कठिन होता है एवं अधिक समय खर्च होता हैं।
5. परिणामों की भविष्यवाणी नही की जा सकती है।

Scanned by CamScanner

(Audio-Aids)

1. रेडियो (Radio)
2. ग्रामोफोन तथा लिंग्वाफोन (Gramophone/Linguaphone)
3. टेप रिकॉर्डर (Tape-Recorder)

(Visual-Aids)

1. नमूने (Models)
2. चित्र (Picture)
3. मानचित्र (Maps)
4. ग्राफ (Graph)
5. वास्तविक वस्तुए (Reals object)
6. चार्ट (Chart)
7. पोस्टर (Poster)
8. छाया चित्र (Photograph)
9. मुक फिल्म (Silent Film)
10. स्लाइड (Slides)
11. बुलेटिन बोर्ड (Bulletin Board)
12. फ्लानेल बोर्ड(Flannel Board)
13. फ्लैश कार्ड (Flash Card)
14. मेग्नेटिक कार्ड (Magnetic Card)
15. रेखाचित्र तथा खाके (Sketches/Diagrams)
16. जादु की लालटेन (Magic Lantern)
17. चित्र विस्तारक यन्त्र (Epidioscope)

1. चलचित्र
2. समाचार–सम्बन्धी फिल्म
3. दूरदर्शन (Television)
4. विडियो टेप (VideoTapes)
5. रिकॉर्ड ध्वनी से युक्त मुद्रित सामग्री (Printed materials with recorded sound)
6. ड्रामा (Drama)

एक वर्गीकरण के अनुसार श्रव्य–दृश्य सामग्री को दो भागो मे विभक्त किया जा सकता है–

1. प्रक्षेपित सामग्री
2. अप्रक्षेपित सामग्री

श्रव्य–दृश्य सामग्री/सहायक सामग्री

Scanned by CamScanner

(News Paper and Magzines) – आधुनिक दृश्य सामग्री में समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं को भी सम्मिलित किया जाता है। इनके द्वारा इतिहास विषय से सम्बन्धित नवीनतम जानकारी प्राप्त होती है। तथा इस जानकारी को देने से शिक्षण रोचक व प्रभावशाली सिद्ध हो सकता है, इतिहास कक्षा में इस सामग्री का उपयोग किया जा सकता है। किसी भी नयी सूचना या सामग्री की कटिंग बालक लेकर बुलेटिन बोर्ड पर अन्य छात्रों की जानकारी हेतु संकलित कर सकता है।

- **पर्यटन (Excurion)** – ऐतिहासिक स्थानों के भ्रमण का इतिहास शिक्षण में महत्वपूर्ण स्थान है, जिन ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी पुस्तक से प्राप्त होती है। उसको स्वय के निरीक्षण द्वारा यथार्थ रूप में प्राप्त करना छात्र को रूचिकर सिद्ध होता है।
- **संग्रहालय (Museum)** – इतिहास में संग्रहालय का भी विशिष्ट स्थान है, संग्रहालय में विभिन्न वस्तुओं का संग्रह किया जाता है। तथा इतिहास शिक्षण में जिस ऐतिहासिक सामग्री का उपयोग किया जाता है।

संग्रहालय में निम्न संकलन होना चाहिये–

1. वास्तविक पदार्थ व नमूने।
2. चार्ट
3. चित्र

Scanned by CamScanner

15. आधुनिकतम घटनाओं तथ्यों व समस्याओं पर बल जो विषय वस्तु से सम्बन्धित हो।
16. विषय सूची, शब्दावली, सन्दर्भ ग्रन्थ सूची, निर्देश नियमावली आदि का पाठ्य पुस्तक में समावेश हो।
17. चिन्तन एवं नवीन विचारों का प्रस्तुतीकरण पाठ्य-

Scanned by CamScanner

इतिहास शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए इतिहास–कक्ष की आवश्यकता होती है। इतिहास–शिक्षकों को प्रशिक्षण द्वारा छात्रों के सम्मुख विषय प्रस्तुतीकरण में इतिहास–कक्ष विशेष सहायक होता है।

(इतिहास कक्ष जहाँ एक ओर विभिन्न उपकरणों एवं स्त्रोत पुस्तकों को सहज सुलभ कर उपयुक्त वातावरण के माध्यम से शिक्षण को रोचक एवं प्रभावशाली बनाता है, वहाँ दूसरी ओर वह इतिहास का विद्यालय के अन्य विषयों से समन्वय स्थापित करने में भी सहायता प्रदान करता है। इतिहास की नवीन धारणा (वैज्ञानिक–दृष्टिकोण पर आधारित) तथा उसकी विकसित एवं विशेष शिक्षण–विधियों ने उसकी आवश्यकता को सबके समक्ष स्पष्ट कर दिया है।)

"Every subject which is recognized as descrining of study in a scholl should name a room of its own" **- Ghate**

इतिहास कक्ष की आवश्यकता को स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किए जा सकते हैं–

1. इतिहास के विभिन्न उपकरणों जैसे– मॉडल, मानचित्र, चार्ट आदि के रखने हेतु एक निश्चित स्थान की आवश्यकता होती है।

Scanned by CamScanner

3. **वैधता (Validity)**– वैधता से अभिप्राय है– परीक्षा जिस उद्धेश्य को लेकर जिस विषयवस्तु की जॉच करने हेतु बनाई गई है, उसकी जॉच करना भी है या नही। एक अच्छा परीक्षण वह है, जो विषय की उपलब्धि या उन्ही योग्यताओं वैद्य जॉच करने में सक्षम हो, जिनके लिए उनका निर्माण किया जाता है।
4. **व्यावहारिकता (Practicability)**–परीक्षण ऐसे हो जिन्हें शिक्षक और छात्र उपयोग में ला सकें जिनका निर्माण सफलता से किया जा सके जो अधिक जटिल परिस्थितियॉ उत्पन्न नही करते हो, जिन्हे आसानी से प्रशासित किया जा सके, अँकन की दृष्टि से जो सरल हो लचीले हो।
5. **मितव्ययता (Economical)**– परीक्षण अधिक खर्चीले न हो। इनके निर्माण प्रशासन, अंकन, परिणाम–विश्लेषण का कार्य मितव्ययता पूर्ण हो। इनमे प्रयोग आने वाली सामग्री ऐसी हो जो सहज ही उपलब्ध हो सके और सस्ती भी हो।
6. **व्यापकता एवं पर्याप्तता (Broad based and appropriate)**— परीक्षण समस्तम पाठ्यक्रम का प्रतिनिधित्व करने वाला। इसमें पदो की पर्याप्त संख्या है। यह सभी शैक्षिक और शिक्षण और शिक्षण प्रक्रिया में सहयोग प्रदान करने वाला हो।
7. **विभेदकता (Differentiation and clalssifi**

Scanned by CamScanner